Page I

BA I,

Paper II

Abnormal Psy.

Topic – Points of views about abnormality
Statistical approach or point of view
of abnormality. (सांख्यिकीय दृष्टिकोण)
यह एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण
के आधार पर व्यक्ति के व्यवहार, चिंतन
संवेगात्मक आदि के विशिष्ट लक्षणों का
जनसंख्या में वितरण के अनुसार औसत
स्तरमान (average norm) निर्धारित किया
जाता है जिन व्यक्तियों में ये विशिष्ट लक्षण
औसत स्तरमान के क्षेत्र या प्रसार की मात्रा के
पाए जाते हैं। उन्हें सामान्य और जिनमें
ये लक्षण उक्त औसत प्रसार (average range)
से बाहर पाए जाते हैं, उन्हें असामान्य / abnormal
कहते हैं। जैसे व्यक्ति की बौद्धिक योग्यता
को लें। मान लिया कि किसी विश्वसनीय
reliable) और सार्थक (valid) बुद्धि-परीक्षण
पर बुद्धिलब्धि-(IQ) का औसत प्रसार ~~कर~~
90 से 110 के बीच सुनिश्चित किया गया, अब यदि
किसी की बुद्धिलब्धि 60 है तो उसे असामान्य
बुद्धि या मंदबुद्धि का व्यक्ति कहा जाएगा।
और यदि किसी की बुद्धि 140 मापी जाए तो
वह भी असामान्य बुद्धि का व्यक्ति कहलाएगा
इन दोनों प्रकार के असामान्य व्यक्तियों

Page No.
Date

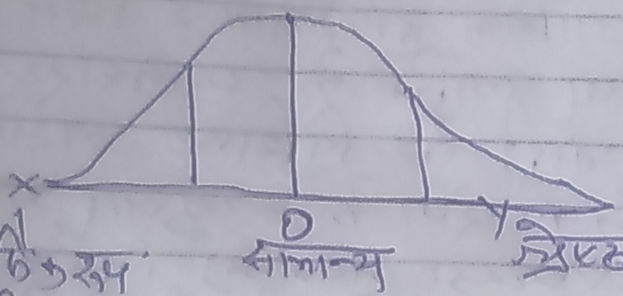

में अंतर केवल 'सामान्य' से विचलन की दिशा का है। 'औसत' या सामान्य स्तर से कम बुद्धि बौद्धिक अक्षमता का हास की दिशा में विचलन का सूचक है, तो सामान्य से अधिक मात्रा की बुद्धि प्रतिक्षमता के अधिक होने की दिशा में विचलन का सूचक। जिसे ग्राफ के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है

उपर्युक्त ग्राफ में बीच में एक लंबवत रेखा मध्यबिन्दु 0 पर गिरती है। यही सम्पूर्ण वितरण का औसत स्थान है इस बिंदु की दायीं और बायीं ओर गुणविशेष में औसत से विचलन की क्रमशः मात्राएँ इंगित होती है। इस प्रकार औसत से कम और अधिक, दोनों स्थितियाँ असामान्यता का सूचक है
इस दृष्टिकोण की प्रमुख विशेषता है
(1.) असामान्यता की यह एक श्रेष्ठ और वैज्ञानिक कसौटी है
(2.) सामान्य और असामान्य के बीच सापेक्ष अंतर है
(3) इस कसौटी से प्राचीन भूत-प्रेत संबंधी भ्रांतियाँ दूर हो जाती है।

Page 3

इस दृष्टिकोण की कुछ त्रुटियाँ भी हैं।

(क) यह कसौटी व्यक्ति की विशेषताओं या गुणों को मापने पर आधारित है। किंतु, व्यक्ति के कुछ गुण ऐसे होते हैं जिन्हें मापने के लिए उपयुक्त मापनी का अभाव है। अत: केवल इस कसौटी के आधार पर असामान्य व्यक्तियों की सही पहचान करने में कठिनाई है।

(ख) इस दृष्टिकोण के आधार पर व्यक्तिविशेष में किसी गुण का कम या अधिक होना - दोनों ही स्थितियाँ असामान्यता के सूचक हैं। यह सही नहीं है किसी व्यक्ति में, यदि कोई अच्छा गुण अधिक मात्रा में विद्यमान हो, तो वह समाज के लिए हितकर ही होगा जैसे, बुद्धिमात्रा या ईमानदारी के गुण का अधिक होना सामाजिक कल्याण की दृष्टिकोण से हितकर माना जाता है। अत: ऐसे व्यक्तियों को असामान्य की श्रेणी में रखना उपयुक्त नहीं लगता।

(ग) इस दृष्टिकोण द्वारा सामान्य और असामान्य में केवल मात्रात्मक अंतर ही स्पष्ट होता है जबकि इनके बीच प्रकारात्मक अंतर भी पाया जाता है।

अत: स्पष्ट है कि यह दृष्टिकोण वैज्ञानिक होते हुए भी पूर्णत: सही नहीं है।

Kumar Patel
Maharaja College, Ara.